

वैदिकवाङ्मय

परीक्षा दृष्टि

(NTA, UGC-NET/JRF, SLET, DSSSB, GIC-Lecturer, GDC, Higher Education
असिस्टेण्ट प्रोफेसर, डायट प्रवक्ता आदि प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए उपयोगी)

लेखक
सर्वज्ञभूषण

प्रकाशक
संस्कृतगङ्गा, दारागञ्ज, प्रयागराज
www.sanskritganga.org

ISBN : 978-81-938257-1-6

☛ **प्रकाशक**

संस्कृतगङ्गा (पञ्जीकृत)
59, मोरी, दारागञ्ज, प्रयागराज
(कोतवाली दारागञ्ज के आगे, गङ्गाकिनारे, संकटमोचन छोटे हनुमान् मन्दिर के पास)
कार्यालय - 7800138404, 9839852033
email-Sanskritganga@gmail.com
बेवसाइट - www.Sanskritganga.org

☛ **वितरक**

* **युनिवर्सल बुक्स**
अल्लापुर, प्रयागराज
* **राजू पुस्तक केन्द्र**
अल्लापुर, प्रयागराज (उत्तर प्रदेश) मो० 9453460552

☛ संस्करण - मई-2019

☛ **मूल्य – ₹ 145 /-** (एक सौ पैंतालीस रुपये मात्र)

☛ **पृष्ठविन्यास** – कृष्णा कम्प्यूटर संस्थान, दारागंज, प्रयागराज

☛ **मुद्रक** – एकेडमी प्रेस, दारागंज, प्रयागराज

भूमिका

प्रिय संस्कृतमित्राणि

नमः संस्कृताय!

वेद भारत की अस्मिता है। वेदों के बिना भारत का अस्तित्व नगण्य है। वेदों के पठन-पाठन पर हमारे ऋषि-मुनियों ने सदैव अत्यधिक बल दिया है, क्योंकि सम्पूर्ण मानव जाति का कल्याण वैदिक मार्ग का अनुसरण करने में ही है। मनु ने वेदों को सभी धर्मों का मूल बताया है - 'वेदोऽखिलो धर्ममूलम्'। वेदों में मानवमात्र के कर्तव्यों का निर्देश किया गया है -

यः कश्चित् कस्यचिद्धर्मो मनुना परिकीर्तितः।
स सर्वोऽभिहितो वेदे सर्वज्ञानमयो हि सः॥

पतञ्जलि भी निःस्वार्थभाव से वेदों का साङ्गोपाङ्ग अध्ययन करने हेतु प्रेरित करते हैं - 'ब्राह्मणेन निष्कारणो धर्मः षडङ्गो वेदोऽध्येयो ज्ञेयश्च।' वेदों को प्रमाणरूप में स्वीकार करना ही एक सच्चे आर्य का लक्षण है - 'प्रामाण्यबुद्धिर्वेदेषु।' परन्तु आज की पीढ़ी वैदिकवाङ्मय के अमूल्य ज्ञान से अनभिज्ञ प्राय है, जो कि भारत की अस्मिता के लिए अत्यन्त विचारणीय प्रश्न है। इस विषय पर गम्भीरतापूर्वक अपने इष्ट मित्रों के साथ विचार कर एक ऐसी पुस्तक का निर्माण करने का सङ्कल्प लिया गया, जो आज की युवा पीढ़ी को वैदिक वाङ्मय को सरलतम भाषा में परिचित करा सके। इस पुस्तक के माध्यम से छात्र वैदिक वाङ्मय के सारगर्भित स्वरूप से परिचित हो सकेगा।

चार वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद), चार उपवेद (आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्ववेद, इतिहासवेद), छः वेदाङ्ग (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष) वेदों के ब्राह्मणग्रन्थ, आरण्यक तथा उपनिषदों के ग्रन्थीय स्वरूप को क्रमशः महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं सहित सरलतम रूप में प्रस्तुत

किया गया है। वैदिक देवताओं के सम्बन्ध में प्रकाश डालते हुए अद्यावधि लिखे गये वेदभाष्यों का भी विवरण प्रस्तुत किया गया है। वैदिक वाङ्मय से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं की सूची इस पुस्तक के महत्त्व को और अधिक बढ़ाती है। **यह पुस्तक UGC-NET/JRF, SLET, DSSSB, GDC, असिस्टेण्ट प्रोफेसर, डायट प्रवक्ता आदि प्रतियोगी परीक्षार्थियों के लिए अत्यन्त उपयोगी होगी - ऐसा मेरा विश्वास है।**

पङ्कजकुमार शर्मा, सत्यप्रकाश साहू, सुमन सिंह, अम्बिकेश प्रताप सिंह, कविता सिंह, नीलम गुप्ता, नितीश उपाध्याय, स्नेहा पाण्डेय, महिमा यादव, कृष्णकुमार, राजेश तिवारी, श्यामकिशोर मिश्र, सन्तोष यादव 'साहब' आदि मित्रों के निरन्तर सहयोग व चिन्तन से ही यह कार्य पूर्णता को प्राप्त कर सका है। इस ग्रन्थ को लिखते समय पूरी सावधानी के साथ यह प्रयत्न किया गया है कि पाठकगण वैदिकवाङ्मय के महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं से अनायास परिचित हो सकें।

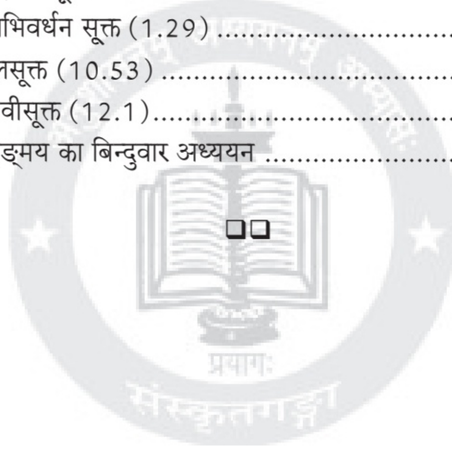
श्रीमान् अनन्त प्रसाद त्रिपाठी (गहनौआ, रीवा म.प्र.) एवं प्रो. ललितकुमार त्रिपाठी (प्रयागराज) के श्री चरणों में प्रणाम करते हुए ये आशा है कि यह ग्रन्थ निश्चित ही पाठकों की जिज्ञासा को पूर्णकर वेदों के प्रति उन्हें आकृष्ट करेगा।

विनयावनत

सर्वज्ञभूषण

❑❑

विषयसूची



❑❑

9. वेदाङ्ग

- वेदों के गूढ़ एवं वास्तविक अर्थों को जानने के लिए जिन सहायक तत्त्वों की आवश्यकता होती है। उन्हे वेदाङ्ग कहते हैं।
- वेदाङ्ग का अर्थ है- वेद के अङ्ग।
- 'वेदाङ्ग' में अङ्ग शब्द का अर्थ है 'वे उपकारक तत्त्व जिनसे वस्तु के स्वरूप का बोध होता है।' 'अङ्ग्यन्ते ज्ञायन्ते एभिरिति अङ्गानि।'
- वेदाङ्गों के द्वारा मन्त्रों का अर्थ उनकी व्याख्या तथा यज्ञ में उनके विनियोग आदि का बोध होता है।
- वेदाङ्गों की संख्या छः है -

शिक्षा व्याकरणं छन्दो निरुक्तं ज्योतिषं तथा।
कल्पश्चेति षडङ्गानि वेदस्याहुर्मनीषिणः।।

शिक्षा, व्याकरण, छन्द, निरुक्त, ज्योतिष, कल्प, वेदाङ्ग के विषय में पाणिनीय शिक्षा में निम्न श्लोक प्राप्त होता है-

'**छन्दः पादौ तु वेदस्य, हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते।**
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।।
शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य, मुखं व्याकरणं स्मृतम्।
तस्मात् साङ्गमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते।। (पा0शि041-42)'

1. छन्द	पाद (पैर)
2. कल्प	हस्त (हाथ)
3. ज्योतिष	चक्षु (नेत्र)
4. निरुक्त	श्रोत्र (कान)
5. शिक्षा	घ्राण (नाक/नासिका)
6. व्याकरण	मुख (मुँह)

- वेदाङ्गो का सर्वप्रथम उल्लेख मुण्डकोपनिषद् में अपरा विद्या के अन्तर्गत चार वेदों के नाम के बाद हुआ।
- उपनिषदों में दो प्रकार की विद्या का उल्लेख प्राप्त होता है-पराविद्या,अपराविद्या। अपराविद्या के अन्तर्गत चार वेद तथा छः वेदाङ्ग आते हैं।

शिक्षाग्रन्थ-

- उपलब्ध शिक्षाग्रन्थ 35 हैं। 32 शिक्षा ग्रन्थों का एक संकलन 'शिक्षा-संग्रह' नाम से प्रकाशित हुआ।
- इसमें ध्वनिविज्ञान से सम्बन्ध उनेक महत्त्वपूर्ण तथ्य दिए गए हैं।

पाणिनीय शिक्षा-

- पाणिनीय शिक्षा वैदिक और लौकिक दोनों के लिए उपयुक्त है।
- पाणिनीय शिक्षा में साठ श्लोक हैं।
- पाणिनीय शिक्षा में वर्णों की संख्या,उच्चारण-प्रक्रिया का ध्वनि-शास्त्रीय वर्णन,स्थान और प्रयत्न का विवरण,संवृत-विवृत,घोष-अघोष,पाठक के गुण-दोषों का वर्णन आदि प्राप्त होता है।
- **भारद्वाज शिक्षा-** पदों की शुद्धता तथा ध्वनि भेद से उदात्त आदि स्वरों में भेद का वर्णन किया है।
- **याज्ञवल्क्य शिक्षा-** याज्ञवल्क्य शिक्षा में 232 श्लोक हैं।

* इसमें वैदिक स्वरों का विवेचन है।

* वर्णों के भेद,स्वरूप,परस्पर साम्य,वैषम्य,लोप आगम-विकार,प्रकृतिभाव आदि का वर्णन है।

- **प्रातिशाख्य प्रदीप शिक्षा-**
  इसमें स्वर-वर्ण आदि की शिक्षा का विवेचन तथा प्राचीन वैयाकरण के मतों का उल्लेख प्राप्त होता है।
- **नारदीय शिक्षा-**
  नारदीय शिक्षा में सामवेद के स्वरों का विस्तार से वर्णन है।
- **अन्य महत्त्वपूर्ण शिक्षा ग्रन्थ-** व्यासशिक्षा, वशिष्ठशिक्षा ,कात्यायनी शिक्षा, पाराशरी शिक्षा,माण्डव्य शिक्षा,माध्यन्दिनी शिक्षा,वर्णरत्नप्रदीपिका,केशवी शिक्षा,स्वरांकन शिक्षा,स्वरभक्ति लक्षण शिक्षा।

व्याकरण वेदाङ्ग –

वेद को व्याकरण का मुख माना जाता है – **'मुखं व्याकरणं स्मृतम्'।**

- जिस शास्त्र के द्वारा शब्दों के प्रकृति प्रत्यय का विवेचन किया जाता है उसे व्याकरण कहते हैं **'व्याक्रियन्ते विविच्यन्ते शब्दाः अनेन इति व्याकरणम्'**
- व्याकरण शास्त्र को दो भागों में बाँटा जा सकता है- वैदिक व्याकरण तथा लौकिक व्याकरण।
- व्याकरण शास्त्र में पद-पदार्थ, वाक्य-वाक्यार्थ आदि का विवेचन प्राप्त होता है। ऋग्वेद के एक मन्त्र में व्याकरण शास्त्र को एक वृषभ के रूपक में बाँधा गया है-

चत्वारि शृंगा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य।
त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्यां आविवेश।।

* चत्वारि शृंगा - नाम, आख्यात, उपसर्ग, निपात।

* त्रयो पादा	-	भूत, भविष्य, वर्तमान काल
* सप्त हस्ता	-	सात विभक्तियाँ
* त्रिधा बद्धो	-	उर,कण्ठ,शिर तीन स्थानों से बँधा हुआ।

➢ शब्दों की व्युत्पत्ति तथा अर्थबोध के लिए व्याकरण का ज्ञान आवश्यक है।
व्याकरणशास्त्र के पाँच प्रयोजन हैं **'रक्षोहागमलघ्वसन्देहाः'**

रक्षा	-	वेदों की रक्षा के लिए।
ऊह (तर्क)	-	यथास्थान विभक्ति-परिवर्तन,वाच्य-परिवर्तन आदि के लिए।
आगम	-	ब्राह्मण को निष्काम भाव से वेद पढ़ना चाहिए
लघु	-	सरल ढंग से शब्द ज्ञान के लिए
असन्देह	-	शब्द और अर्थ विषयक सन्देह के निराकरण के लिए।

संस्कृत व्याकरण के आचार्य एवं महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ

पाणिनि के पूर्ववर्ती वैयाकरण-

➢ आचार्य पाणिनि ने दस आचार्यों का उल्लेख अष्टाध्यायी में किया है- आपिशलि, काश्यप, गार्ग्य, भारद्वाज, शाकटायन, स्फोटायन ये मुख्य हैं।

➢ प्रातिशाख्य आदि में पाणिनि से पूर्ववर्ती लगभग 75 आचार्यों का उल्लेख है जिसमें प्रमुख आचार्य हैं- शिव (महेश्वर), बृहस्पति , इन्द्र, आचार्य व्याडि, आत्रेय, कात्यायन, काण्व,गौतम,यास्क,वाल्मीकि,शाकल्य, शाकल,शौनक, शांखायन, हारीत आदि।

आचार्य पाणिनि एवं परवर्ती आचार्य

➢ आचार्य पाणिनि को दाक्षीपुत्र,शालातुरीय और आहिक नाम से भी जाना जाता है।

➢ आचार्य कात्यायन ने अष्टाध्यायी के सूत्रों पर वार्तिक लिखा।इनका समय चतुर्थ शती ई0पू0 माना जाता है।

➢ आचार्य पतञ्जलि को गोणिकापुत्र,गोनर्दीय, अहिपति,शेषाहि नाम से जाना जाता है।

➢ आचार्य पतञ्जलि ने पाणिनि के अष्टाध्यायी और कात्यायन के वार्तिक पर भाष्य लिखा जिसे **महाभाष्य** कहा जाता है।

➢ पाणिनि,कात्यायन और पतञ्जलि की गणना **'मुनित्रय'** के रूप में होती है।

➢ आचार्य भर्तृहरि का समय 340ई0पू0 के लगभग है।

➢ आचार्य भर्तृहरि का निवास उज्जैन माना जाता है। इनके द्वारा रचित 'वाक्यपदीय' दार्शनिक व्याकरण का सर्वोत्तम ग्रन्थ है।

➢ वाक्यपदीयम् में तीन काण्ड हैं– ब्रह्मकाण्ड (आगमकाण्ड),वाक्यकाण्ड,पदकाण्ड या प्रकीर्ण काण्ड।

➢ जयादित्य और वामन का समय 660 ई0 के लगभग है इन्होंने अष्टाध्यायी पर काशिका टीका लिखी।

➢ आचार्य कैय्यट का समय 1035 ई0 के लगभग है ये काश्मीर के निवासी थे इन्होंने महाभाष्य पर 'प्रदीप' नाम की टीका लिखी।

➢ भट्टोजिदीक्षित का समय 1450ई॰ के लगभग है इन्होंने अष्टाध्यायी के सूत्रों पर

वृत्ति सहित 'सिद्धान्तकौमुदी' नामक ग्रन्थ लिखा।

- **नागेशभट्ट-** नागेशभट्ट महाराष्ट्रीय ब्राह्मण थे।
  उद्योत टीका (महाभाष्य की टीका) लघुशब्देन्दुशेखर,बृहत्शब्देन्दुशेखर, परिभाषेन्दुशेखर,स्फोटवाद, मञ्जूषा,लघुमञ्जूषा,परमलघुमञ्जूषा नागेशभट्ट द्वारा रचित ग्रन्थ हैं।
- लघुसिद्धान्त कौमुदी तथा मध्यसिद्धान्त कौमुदी के लेखक वरदराज हैं, इनका समय 1475 ई0 के लगभग माना जाता है।

➢ अन्य वैयाकरण -

वैयाकरण	-	ग्रन्थ/टीका
वृषभदेव	-	वाक्यपदीय प्रथम काण्ड पर टीका
पुण्यराज	-	वाक्यपदीय द्वितीय काण्ड के टीकाकार
हेलाराज	-	सम्पूर्ण वाक्यपदीय के टीकाकार
मण्डनमिश्र	-	स्फोट सिद्धान्त के रचयिता
कौण्डभट्ट	-	वैयाकरणभूषण और वैयाकरणभूषणसार के रचयिता
भट्टि	-	भट्टिकाव्य के रचयिता

- **प्रातिशाख्य ग्रन्थ-**
  प्रातिशाख्य शब्द का अर्थ है 'प्रत्येक शाखा से सम्बद्ध व्याकरण आदि का बोध कराने वाला ग्रन्थ।'
- प्रातिशाख्य ग्रन्थों का शिक्षा, व्याकरण और छन्द तीनों से साक्षात् सम्बन्ध है। वेदों के यथार्थ ज्ञान के लिए वर्णोच्चारणशिक्षा, सन्धि नियम, शब्दरूप, धातुरूप उदात्तादि स्वर और छन्दों का ज्ञान आवश्यक है इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए प्रातिशाख्य ग्रन्थों की रचना हुई।

ऋक्प्रातिशाख्य का परिचय

- ऋक्प्रातिशाख्य का सम्बन्ध ऋग्वेद की शाकल शाखा से है।
- ऋक्प्रातिशाख्य को पार्षद या पारिषद सूत्र भी कहा जाता है।
- ऋक्प्रातिशाख्य के रचयिता आचार्य शौनक हैं।

  ऋक्प्रातिशाख्य में प्रतिपादित विषय-
- पारिभाषिक शब्दों के लक्षण, विभिन्न सन्धियों का विवेचन, क्रमपाठ का विवरण, पद विभाग और व्यञ्जनों के स्वरूप का विवेचन।
- ऋक्प्रातिशाख्य पर दो भाष्य प्राप्त होते हैं-
- उव्वट का भाष्य जिसका समय 11वीं शती ई. भाष्य है।
  नोट- इसके अतिरिक्त उव्वट ने शुक्ल यजुर्वेद का भी भाष्य किया। विष्णुमित्र कृत वृत्ति।

शुक्ल यजुः प्रातिशाख्य या वाजसनेयि प्रातिशाख्य-

- इस प्रातिशाख्य के रचयिता कात्यायन हैं।
- शुक्ल यजुःप्रातिशाख्य में आठ अध्याय हैं।
- शुक्ल यजुःप्रातिशाख्य में दस प्राचीन ऋषियों के नामों का उल्लेख है जो हैं- काण्व, काश्यप, गार्ग्य, माध्यन्दिन, शाकटायन, शाकल्य, शौनक आदि।
- इस प्रातिशाख्य के वर्ण्य विषय हैं- वर्णविचार, स्वरविचार, सन्धिविचार, पदपाठ विचार, क्रमपाठ विचार, वेदाध्ययन-विषयक विचार।
- आचार्य पाणिनि इसी प्रातिशाख्य से पारिभाषिक शब्द को लिए हैं जैसे- उदात्त, अनुदात्त, स्वरित, लोप, उपधा, आम्रेडित, अपृक्त।
- शुक्लयजुर्वेद प्रातिशाख्य की दो व्याख्या प्राप्त होती है -
  1. उव्वट द्वारा मातृवेद नामक भाष्य
  2. अनन्तभट्ट कृत पदार्थ प्रकाशक नामक भाष्य।

तैत्तिरीयप्रातिशाख्य-

- तैत्तिरीय प्रातिशाख्य का सम्बन्ध कृष्ण यजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा से है। दो प्रश्नों में बारह-बारह अध्याय हैं, इसप्रकार इस प्रातिशाख्य में कुल चौबीस अध्याय हैं।
- वर्ण-समाम्नाय, स्वर एवं व्यञ्जन सन्धियाँ, अनुस्वार एवं अनुनासिक का भेद, स्वरों के भेद, संहिता का स्वरूप आदि।
- तैत्तिरीय प्रातिशाख्य की तीन व्याख्याएँ प्राप्त होती हैं-
  1 माहिषेय कृत 'पदक्रम सदन' भाष्य।
  2 सोमयार्य कृत त्रिभाष्य रत्न भाष्य।
  3 गोपालयज्वा कृत वैदिकाभरण।

सामवेदीय प्रातिशाख्य

पुष्पसूत्र

- पुष्पसूत्र के प्रणेता पुष्प ऋषि हैं।
- इसमें 10 प्रपाठक हैं जिनका सम्बन्ध सामगान से है।
- पुष्पसूत्र पर अजातशत्रु की व्याख्या उपलब्ध है।
- पुष्पसूत्र में स्तोभ का मुख्य रूप से विवेचन है।

ऋक्तन्त्र-

- 'ऋक्तन्त्र' सामवेद की कौथमुशाखा से सम्बन्धित प्रातिशाख्य ग्रन्थ है।
- 'ऋक्तन्त्र व्याकरण' भी इसे कहा जाता है।
- ऋक्तन्त्र में पाँच प्रपाठक तथा 280 सूत्र हैं।
- ऋक्तन्त्र के रचयिता 'शाकटायन' हैं।
- वर्णोच्चारण शिक्षा, सन्धिविचार, पदान्त वर्णों के विभिन्न परिवर्तन, आदि इसके वर्ण्य विषय हैं।

- ऋकतन्त्र में पारिभाषिक संज्ञाएँ तीन प्रकार की हैं - कृत्रिम, आदि या अन्त का अक्षर तथा अन्वर्थक।

अथर्ववेदीय प्रातिशाख्य

- अथर्ववेद से सम्बन्धित दो प्रातिशाख्य उपलब्ध हैं-
  (1) शौनकीय चतुरध्यायिका (2) अथर्ववेद प्रातिशाख्य।

शौनकीय चतुरध्यायिका-

- इसके लेखक शौनक माने गए हैं।
- अंग्रेजी अनुवाद के साथ डा. **व्हिटनी** ने इसे प्रकाशित किया। इसमें चार अध्याय हैं।
- ध्वनि विचार, सन्धिविवेचन, संहिता पाठ, अवग्रह, प्रगृह्य आदि का वर्णन इस प्रातिशाख्य में है।

अथर्ववेद प्रातिशाख्य-

- डॉ. सूर्यकान्त ने 1940 में लाहौर से प्रकाशित किया इसमें सन्धि, स्वर और पदपाठ के नियमों का वर्णन है।

छन्द-वेदाङ्ग

- छन्द शब्द छद् धातु (ढँकना) से बना है।
- 'छन्दांसि छादनात्' अर्थात् छन्द भावों को आच्छादित करके उसे समष्टि रूप प्रदान करता है- आचार्य यास्क।
- **'यदक्षरपरिमाणं तच्छन्दः'** जिसमें वर्णों या अक्षरों की संख्या निर्धारित होती है, उसे छन्द कहते हैं- आचार्य कात्यायन।
- वैदिक छन्दों का आधार अक्षर या वर्णों की संख्या है।
- छन्द को वेद का पाद (पैर) कहा जाता है **'छन्दः पादौ तु वेदस्य'**।
- आठ अध्यायों में विभक्त छन्दःसूत्र के रचयिता आचार्य पिङ्गल हैं।
- वैदिक छन्द वृत्तात्मक हैं तथा इनमें मात्रिक छन्दों का अभाव है।
- निदानसूत्र में छन्दों के नाम और लक्षण दिये गए हैं।
- **पिंगल के छन्दःसूत्र** के पूर्वभाग में वैदिक छन्दों का तथा उत्तरभाग में लौकिक छन्दों का विवेचन प्राप्त होता है।
- वैदिक छन्दों को 'अक्षर छन्द' भी कहा जाता है।
- वैदिक छन्द दो प्रकार के होते हैं- अक्षरगणनानुसारी तथा पादाक्षरगणनानुसारी।
- जिसमें अक्षरों की गणना हो उसे अक्षरगणनानुसारी तथा जिसमें पदों की गणना हो उसे 'पादाक्षरगणनानुसारी' छन्द कहते हैं।
- वैदिक छन्दों की कुल संख्या 26 है।
- ऋग्वेद में प्रयुक्त छन्दों की संख्या बीस है।
- वेदों में मुख्य रूप से सात छन्दों का प्रयोग है जो हैं- गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप्, बृहती, पंक्ति, त्रिष्टुप्, जगती।